वीरवृत्तान्तमाला न० १

(अर्थात् छत्रपति श्रीमान् शिवाजी)

आज यदि महाराष्ट्र का गौरव है तो छत्रपति शिवाजी के नामसे है ऐसा कौन है जो आप के जीवन वृत्तान्तको सुनना नहीं चाहता ? परन्तु आज हम अपने हिन्दी पठित भाइयों को यह शुभ समाचार सुनाने के लिये उद्यत हुवे हैं कि लोकमान्य लाला लाजपतिराय के उर्दू सेवाजी का नागरी में भी अनुवाद छपगया । इसके देखने से न केवल आपको शिवाजी की जीवनी का ही आनंद मिलेगा किन्तु भारतवर्ष की पूर्वीय दशा प्राचीन भारत का स्वभाव शीलता दृढ़ता एवं बुद्धिमत्ता यवनों का हिन्दुओं पर अत्याचार विशेष २ घटनाओं का चित्र आपके सामने आजायगा और आपको पता लगेगा कि आपके साथ क्या २ बर्त्ताव कियागया । इस पुस्तक से सभी मनुष्य बुद्ध वृद्ध सभी लाभ उठा सकते हैं इसकी उत्तमता के विषय में इतना ही काफी समझते हैं कि यह लाजपतिराय जी की उर्दू में रची " सेवाजी मराठा " नामी पोथीका अक्षरानुवाद है । मूल्य केवल ।।) सजिल्द ।।-)

NITI SHATAKAM

BY

MAHARAJA BHARTRIHARI

TRANSLATED

INTO

HINDI AND ENGLISH

BY

P. JWALA DATTA SHARMA

of

MORADABAD.

PRINTED AND PUBLISHED

BY

P. SHANKAR DATT SHARMA

at the Dharm Diwakar Press

Moradabad

1909

First Edetien
1000

Price 4 Annas

PREFACE.

It is a fact that the knowledge of ethical science is of great importance.

It is as much necessary to maintain human society in good order, as aknowledge of sanitary laws is to maintain the physical health of it's individuals. In ancient times, moral education was imparted to the people of Bharat warsh very widely.

The king & the peasant, equally reaped the benifits of a moral teaching early in life.

This is the reason that we remember the people of olden times so reverentially.

-While in these days even men with a great store of learning are sometimes unable to please the Civilised society,

We are obliged to admit that they very often fail to keep a strictly moral conduct.

.. At such a time, I think, it would be simply ministoring to a want to present to the public the Translation of maharaja Bhartari hari's Niti Shataka"

I hope that the public would fruitefy the labors of our work by carofully reading the book once.

JWALA DATTA SHARMA

Kisrol,

Moradabad.

24-4-90

भूमिका

प्रथम तो मनुष्यजन्म ही कठिन और यदि यह नरशरीर मिला, तब विद्वान् होना महा-कठिन और यदि विद्वान् भी होगये तब सभ्य बनना अत्यन्त मुश्किल है।

लोग कहते हैं अमुक मनुष्य है तो बड़ा विद्वान् परन्तु अभी बात करना तक नहीं आता या अमुक विद्वान् होने पर भी धोखा खागया इत्यादि। इस के अतिरिक्त बहुत कम ऐसे विद्वान् मिलैंगे जो उन्हीं नियमों पर चलते हों जो कुछ उन्हों ने पढ़े हैं। अवश्य आपके मनमें विचार उदय हुआ होगा कि इस का कारण क्या है? वास्तव में इसका का-रण नीतिशिक्षा का अभाव है। यावत् यह शिक्षा न दी जायगी तावत् सभ्य बनना और हर काम में कुशल होना महान् कठिन है। यदि कोई मनुष्य गणित विद्या का पारंगत है तब क्या यह आवश्य

कीय है कि वह वैद्यकशास्त्र का भी ज्ञाता बन जाय ! गणितशास्त्र के पढ़ने से गणितशास्त्र में ही योग्यता होसक्ती है, वैद्यकशास्त्र के सिद्धान्तों को वह गणितशास्त्र के पढ़ने से नहीं जान सक्ता। यदि गणितशास्त्रवेत्ता प्रायः बीमार रहता है तब क्या उस को दोष दिया जासक्ता है कि वह क्यों बीमार रहता है और वह कैसा गणितशास्त्रज्ञ है जो स्वास्थ्यरक्षा और वैद्यक के नियमों को नहीं जान सक्ता।

ठीक यही दशा आजकल के पठित समाज की है, वे जिस विषय (Subject) को पढ़ते हैं उस में योग्य होते हैं जो उन को पढ़ाया नहीं जाता यदि उस में वे अनभिज्ञ हैं तब उनका क्या दोष ! क्या एक सम्पत्तिशास्त्र (Political economy) के विद्यार्थी के लिये आवश्यकीय है कि वह भूगोल और खगोल सम्बन्धी बातें भी जानजाय।

लोग शिकायत करते हैं, कि मनुष्य सदाचारी नहीं बनते, योग्य और कर्मकुशल नहीं बनते। यह एक ऐसी शिकायत है जैसे कोई पिता अपने

पुत्र को न पढ़ाता हुआ यह कहे कि वह विद्वान् नहीं बनता।

हमने किसी उर्दू पुस्तक में एक शेर पढ़ा था वास्तव में वह बड़ा ही भावपूर्ण और ध्यान में रखने के लायक है जहां तक हमें स्मरण है वह इस प्रकार है—

हमने माना हो फ़रिश्ते शेख़जी,
आदमी होना बड़ा दुशवार है।

आदमी बनने और फरिश्ते बनने में अन्तर है दोनों एक नहीं हैं।

प्राचीन काल में यहां नीतिशिक्षा का कितना प्रचार था सो तत्कालीन ग्रन्थों के देखने से भली प्रकार मालूम होता है। उस समय नीतिशिक्षा प्रायः सब को ही दीजाती थी क्या राजा क्या रंक सभीके लिये अलग अलग नीतिग्रन्थ बनगये थे।

पोलिटिकल परिवर्त्तनों से जो संस्कृतग्रन्थ बच गये हैं उनमें तीन ग्रन्थ नीतिके लिये प्रसिद्ध हैं— १—चाणक्यनीति, २—शुक्रनीति और भर्तृहरिजीका नीतिशतक। इन के अतिरिक्त और भी नीति के

ग्रन्थ पायेजाते हैं । विदुरजी की नीति भी प्रसिद्ध है ।

हमको एक छोटीसी हस्तलिखित पुस्तक मिली है वह भी नीति की है पुस्तक बड़ी भावपूर्ण है परन्तु लेखक ने उसको बहुत अशुद्ध लिखा है और बहुत दिनों की लिखी होने के कारण उसके पृष्ट भी फटगये है जिसके कारण बहुत से श्लोकों के एक २ दो २ चरण उड़गये हैं । इसी कारण हम उसको प्रकाशित न करसके । परन्तु इस से यह विचार तो अवश्य होता है कि इसी तरह और भी अनेक नीतिग्रन्थ रहे होंगे कुछ उन बादशाहों के जो अपने को सभ्यता का अवतार मानते थे और उनकी जाति अब भी अपने आप को मुह-ज़ज़ब समझतीहै हम्माम गरम करने में खर्चआये कुछ हमारे ध्यान न देने से नष्ट होगये ।

परन्तु यह मत निर्भ्रांत है निःसंशय और निः संदेह कि पहले समय में नीतिशास्त्र और नीति शिक्षा की कमी नहीं थी ।

यह कारण था कि हमारे पुरुषा अद्वितीय विद्वान

कुशल और सुसभ्य थे । कोई पुत्र पिताकी अवज्ञा नहीं करता था कोई स्त्री पति की अनाज्ञाकारिणी नहीं सुनी गई । कैसा ही विकट समय क्यों न उपस्थित हुआ वे नहीं घबराते थे, प्रत्युत, युक्ति और बलद्वारा अपना कार्य शीघ्र करलेते थे । इस प्रकार के उदाहरणों की हमारे यहां कमी नहीं है जिसकी इच्छा हो वह और न सही तो ध्यानपूर्वक रामायण और महाभारत का ही पाठ करजाय ।

परन्तु आज इतनी गहरी सभ्यता होने पर भी हम सैकड़ों मुकद्दमे ऐसे देखते हैं जिनमें एक ओर पुत्र और प्रतिपक्ष में पिता है ! स्त्री पतिपर अभियोग चलाती है। नित्यप्रति के व्यवहार में तो अनेक ऐसे उदाहरण इस नवीन सभ्यताके मिलते हैं कदाचित् उनका प्राचीन समयमें उल्लेखभी नहो ।

हम अवश्य जानते हैं, कि केवल नीतिशिक्षा के अभाव सेही यह दशा नहीं वरन् इस में धर्म-शिक्षा का अभाव भी एक कारण है । परन्तु वह इस समय हमारा विषय नहीं, उसके विषय पर फिर किसी समय लिखेंगे ।

हमारा यह विचार है यदि मनुष्य "नीति" के गूढ़ विषय को समझले तब उस को इसी शिक्षाके साथ २ धर्मशिक्षा भी मिलसक्ती है।

क्या वह नीतिज्ञ होसक्ता है जिस से कोई अधर्म का कार्य्य बने ?

हमारे लिये आवश्यकीय है कि हम अपनी सन्तानों को जहां अनेक प्रकार की शिक्षा देते हैं वहां साथ ही "नीतिशिक्षा" भी दें। क्योंकि ये बालक ही हमारी भावी उन्नति के उत्तरदाता और बीज हैं, इन्हीं में हमारे देश, जाति और धर्मका उपकार करने का तत्त्व छिपा हुआ है अंग्रेजी में एक कहावत है किः—

Child is the father of man

परन्तु बच्चों को नीतिशिक्षा कौन दे यहां तो स्वयं ही उस से परिचित नहीं।

इसी अभिप्राय से कि हमारे देशभ्राता प्रथम स्वयं नीति के महत्त्वको समझ जायँ हमने प्रसिद्ध श्रीयुक्त भर्तृहरिजी के "नीतिशतक" का हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद आप की भेंट किया है।

प्रायः हमारे भाई तीन भाषा में से कोई न कोई अवश्य ज़ानते हैं। संस्कृत, हिन्दी, या अंग्रेज़ी।

तीनों भाषाभाषी; इस पुस्तक से लाभ उठा सक्ते हैं, यदि ऐसा हुआ तब हम भी अपने परिश्रम को सफल समझैंगे और फिर किसी ऐसी ही कृति को आप की भेंट करने का साहस कर सकेंगे।

नीतिज्ञों का सेवक—

किसरौल,
मुरादाबाद
१९-४-०९

ज्वालादत्तशर्म्मा

॥ ओ३म्

अथ भर्तृहरिकृतं

नीतिशतकम् ॥

परमात्मने नमः ॥

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥१॥

जो ईश्वर दशों दिशा तीनों काल एवं आकाशादि में व्याप्त है और अपने ही अनुभव से जानने योग्य है ऐसे शान्त एवं प्रकाशस्वरूप परमत्मा को नमस्कार है ॥ १ ॥

BHARTRI HARI'S
NITI SHATAK,

1. Salútation to God pervading time and space &c. absolute Intellect, only to be known by self conciousness all calm and all Glory.

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः ।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥२॥

जिस (रानी)से मैं प्रेम रखताहूं वह अन्य पुरुष को चाहती है और वह पुरुष किसी और स्त्री से प्रेम करता है और वह स्त्री हम से प्रसन्न है इस लिये रानी को उस अन्य पुरुष एवं कामदेव को तथा इस वेश्या और मुझ को धिक्कारहै ॥ २ ॥

2. The woman is indefferent to me to whom I love always, she woes another man who loves another lady enamoured of me. Ah! fie to her, her paramour, to God of lust, to prostitute and to me.

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापितं नरं न रंजयति ३

अज्ञानी, सुखपूर्वक और ज्ञानी बड़ी सरलता से समझ सक्ता है परन्तु जो अल्पज्ञानी है उस

मनुष्य को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं करसक्ता ॥ ३ ॥

3. To please the ignorant is easy and to the learned still more easy. But Brahma even cannot please the half learneb man.

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रांऽकुरात्
समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ॥
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
नतुप्रतिनिविष्ठमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥४॥

मनुष्य बलद्वारा मगर की दाढ़ों की नोक से मणि निकाल सक्ता है, चंचल तरङ्गों से शोभित समुद्र को तैरसक्ता है, और कुपित सर्पको भी पुष्पमाला के समान शिर में धारण करसक्ता है परन्तु मूर्ख के चित्त को जो कुकर्म में फंसरहा है, नहीं हटा सकता ॥ ४ ॥

4. It is possible to take out by force the jewels from the points of teeth of the elegator, to swim across the ocean filled with swelling billows, even to carry the vexed serpent on the fhead like a flower but it is impossible to reclaim

the ignorant's mind set upon a thing however wrong it may be.

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्चमृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः॥
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
नतु प्रतिनिविष्टमूर्खजन चित्तमाराधयेत् ॥५॥

कदाचित्, यत्नद्वारा बालूसेभी तैल निकलसक्ता है प्यासा मनुष्य मृगतृष्णासे भी अपनी प्यास बुझा सक्ता है और खोजने से खरगोश का सींग भी मिलसक्ता है यह सब बातैं असम्भव होने पर भी सम्भव होसक्ती हैं परन्तु मूर्ख मनुष्य के मन को सुधारना नितान्त असम्भव है ॥ ५ ॥

5. From the lump of sand oil can be obtained with an effort by pressing, from a marriage water can be obtained dy a thirsty, in ramble one may find out perhaps an hair with h o n but the mind of the ignorant set upon a false thing cannot be corrected.

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ
रोद्धुं समुज्जृम्भते।
छेत्तुंवज्रमणीञ्छिरीषकुसुम-
प्रान्तेन सन्नह्यते ।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितु
क्षाराम्बुधेरीहते,
नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां
सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः ॥ ६ ॥

जो मनुष्य अपने अमृतरूपी वचनों द्वारा खल मनुष्य को सन्मार्ग में लाना चाहता है (मानो) वह कमल की कोमल डण्डी के सूत से हाथी को बांधना चाहता है, सिरस के पुष्प की पंखरी से हीरे को बेधने का यत्न करता है और बूंदभर शहद से खारी समुद्र को मीठा करना चाहता है ॥ ६ ॥

6. One who desires to please the fools with his sweet words tries to tie the elephant

with the thread produced from the root of the Kamal flower, and to pierce the diamond with the leaf of the Suras flower and to make sweet the salty ocean with one drop of honey.

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा ।
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः ॥
विशेषतः सर्वविदां समाजे।
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥ ७ ॥

मौन रहना अपने आधीन गुण है ब्रह्मा ने इस को मूर्खता का ढकना बनाया है, और विशेष कर पण्डितों की सभा में तो यह मूर्खों का बहुत बड़ा आभूषण है ॥ ७ ॥

7. Silence is the cover of ignorance the quality of voluntary reserve is made by Brahma as an ornament of the fools especially in the assembly of the learned.

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहंद्विप इवमदांधः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवद्वलिप्तं मम मनः ॥

यदाकिञ्चित्किञ्चिद्बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीतिज्वरइवमदो मे व्यपगतः ८

जब मैं अल्पज्ञ था, तब हस्ती की समान मदान्ध होरहा था तब मैं मन में सोचता था, कि मैं सर्वज्ञ हूं, परन्तु जब मैंने पण्डितों का सत्संग करके कुछ ज्ञान प्राप्त किया तब मैंने अपने को मूर्ख पाया और मेरामद ज्वर की समान उतरगया ॥ ८ ॥

8. When I knew a little I was blind by pride as an elephant by lust, then my mind was puffed up with the arrogance that I know all. but when I came to know something by the company of the learned my pride left me like fever from the conviction that I was ignorant indeed.

कृमिकुलाचितंलालाक्लिन्नं विगार्हिजुगुप्सितम्
निरुपमरसं प्रीत्या खादन्नरास्थिनिरामिषम् ॥
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शङ्कते
नहि गणयतिक्षुद्रो जंतुःपरिग्रहफल्गुऽताम् ९

क्षुद्र मनुष्य जिस वस्तु का ग्रहण करता है उस की तुच्छता पर उसी प्रकार ध्यान नहीं देता और सज्जनों की निन्दा से नहीं डरता ठीक जिसप्रकार कोई कुत्ता, कीड़ों से युक्त लार से भीगे दुर्गन्धि से पूरित, निन्दित, नीरस एवं मांसरहित मनुष्य के हाड़ को खाते समय अपने पास खड़ेहुये इन्द्र को देख कर भी शङ्का नहीं करता ॥ ९ ॥

9. A mean fellow does not care the unworthiness of a thing he holds, just as a dog does not care even the Indra standing by when engaged in eating a bone full of multitude of warms, fleshless, tasteless and smeared with slime, filthy and disguesting.

शिरः शार्वं स्वर्गात्पतति शिरसस्तात्क्षितिधरं
महीध्राादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम् ।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकभ्रष्टानांभवतिविनिपातःशतमुखः १०

गङ्गाजी प्रथम स्वर्ग से महादेव के शिरपर गिरीं वहां से ऊँचे पर्वतपर, उस पर्वत से भूमिपर, भूमि

से समुद्र में गिरीं, इसी प्रकार विवेक भ्रष्ट मनुष्य भी अनेकप्रकारसे नीचे कोही गिरते जाते हैं १०॥

10. This Ganga first fell from the paradise on the head of Shiva and thence on the high mountain and from that place on the earth and therefrom to the ocean. Thus going down and down became less also in volnme. In like way a person destitnte of wisdom meets in hnndered ways his fall (or runis).

शक्यो वारयितुंजलेनहुतभुक्छत्रेणसूर्यातपो
नागेन्द्रोनिशितांकुशेनसमदोदण्डेनगोगर्दभौ
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं—
मूर्खस्यनास्त्यौषधम् ॥ ११ ॥

जलसे अग्नि को, छत्रीसे धूपका तेज, अंकुश से हाथीका, दंडेसे बैल और गधेका, अनेक औषधों से रोग का और मंत्र प्रयोग से विष का निवारण कियाजासक्ताहै। इसप्रकार सबका शास्त्रोक्त औषध है परन्तु खं मनुष्य की कोई औषधि नहीं॥११॥

II. As the fire can be vanquished with water, sun shine (can be :removed) with an umbrella, an elephant with a sharp iron goad, Asses so on with a rod, a dicease wsth a medicine and poison is diseffected with an Application of various Mantrss (incantations) ; in short every sort of medicine is prescriped in the Shastras, but there is no medicine for the fool in the shastras.

साहित्यसङ्गीतकला विहीनः—
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमान—
स्तद्भागधेयंपरमंपशूनाम् ॥१२॥

जो मनुष्य साहित्य, संगीतशास्त्र और कलाकौशल की विद्या से अनजान है, वह साक्षात् विना पूंछ और सींगवाला पशुहै, यह पशु विना घास खाये जीताहै यह इस विलक्षण पशुका उत्तम भाग्यहै१२

12. The man devoid of music or skill is evidently a beast without a tail or horn. His

superiority over the lower animals in his living without grazing grass.

येषां न विद्या न तपो न दानं-
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता-
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥१३॥

जो मनुष्य न विद्वान् न तपस्वी न दानी न ज्ञानवान् न सुशील न गुणी और न धर्म्मात्मा हैं। वे संसार में पृथ्वी पर भार रूप हुए मनुष्य रूप में पशु की समान विचरते हैं॥ १३ ॥

13. Those persons are burden on the earth and live the life of a beast in human form, who possess neither learning, meditation, generosity, spiritual knowledge, good charactor, attainment nor virtue.

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैस्सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभुवनेष्वपि॥१४॥

पहाड़ों और दुर्गम वनोंमें शेर और भील

आदि वनचरों के साथ भ्रमण करना भला है परन्तु मूर्खों का सहवास इन्द्रभवन में भी त्याज्य है ॥ १४ ॥

14. Wandering in the forests and mountains with the wild beasts is better than the company of an ignorant man in the court of immortals.

शास्त्रोपस्कृत शब्द सुन्दरगिरः—
शिष्य प्रदेयागमा ।
विख्याताः कवयो वसन्ति विषये—
यस्य प्रभोर्निर्धनाः ॥
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो—
ह्यर्थं विनापीश्वराः ।
कुत्साः स्युः कुपरीक्षकाहि मणयो—
यैरर्घतः पातिताः ॥ १५ ॥

शास्त्रों के शब्दों से जिनकी वाणी सुन्दर है शिष्यों के देने योग्य जिनके पास विद्या है ऐसे

कवि जिस राजाके देश में निर्धन हुऐ वास करते हैं, वह राजा मूर्ख है, कविजन विना धन के भी उत्तम हैं क्योंकि जिन्हों ने मणियोंका मूल्य घटा दिया है वे परीक्षक ही खोटे हैं किन्तु मणि किसी प्रकार दूषित नहीं ॥ १५ ॥

15. The king in whose reign the famous poets having sweet language with the practice of the Shastras, and able to teach the students, and renouned, are poor; it is his folly, for they are kings even without riches, just as the jewellers are to blame only who reduce the price of the jewels.

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं-
पुष्णाति यत्सर्वदा।
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं-
प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ॥
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं-
विद्याख्यमन्तर्धनं।

येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः
कस्तैः सह स्पर्धते ॥ १६ ॥

जो हरनेवाले को नहीं दीख पड़ता सर्वदा सुख बढ़ाता, विद्यार्थियों को देने पर भी बहुत बढ़ता, और कल्पान्त अर्थात् प्रलयकाल में भी जिसका नाश नहीं होता ऐसा छिपाहुआ विद्यारूपी धन जिनके पास है, हे राजा लोगों ! उनसे अभिमान मत करो क्योंकि उनकी बराबरी कोई नहीं कर सक्ता ॥ १६ ॥

16. Oh king ! dont show your pride to those who possess the secret knowledge of trea sure that is ever unseen by the robber that increases the more it is asked of by its seekers day and night, "and that is not exhausted in the lapse of ages, for who can rival it.

अधिगतपरमार्थान् पण्डितान्माऽवमंस्था–
स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैवतान् संरुणद्धि ।
अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानाम्–
न भवति विसतन्तुर्वारणं वारणानाम्॥१७॥

जिनके पास परम अर्थ अर्थात् मोक्ष तक की सामग्री प्रस्तुत है ऐसे विद्वानों का निरादर मत करो क्योंकि उनको तुम्हारी तृणवत् तुच्छ लक्ष्मी उस प्रकार नहीं रोकसक्ती जिस प्रकार महामत्त गजराज को कमल की नाभि का सूत नहीं बांध सक्ता ॥ १७ ॥

17. Do not disrespect the learned men who are versed in divine knowledge. They are not attached by wealth which is like a bit of grass to them, just as the fibres of a lotus stalk cannot become fetters to elephant whose temples are bedaubed by the flowing of black secretion in the rutling season.

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव-
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।
नत्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां-
वैदग्ध्यकीर्त्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥ १८ ॥

यदि विधाता हंस पर क्रोध करे, तब वह उस के कमल वन में रहने के आनन्द को नष्ट कर

सक्ताहै परन्तु उसके दूध और जलके अलग२ करने के प्रसिद्ध चातुर्य्य और उससे मिलनेवाले यश को नष्ट करने में वह (विधाता) सर्वथा असमर्थ है ॥ १८॥

18. The angry fortune of the swan can destroy his sports and residence in the clusture of lotuses but she is unable to take off his well known skill in the process of separating milk from water.

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं-
हारा न चन्द्रोज्ज्वला ।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं-
नालङ्कृता मूर्द्धजाः ॥
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं-
या संस्कृता धार्यते ।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं-
वाग्भूषण भूषणम् ॥ १९ ॥

मनुष्य को बाजूबन्द, चन्द्रमाकी समान उज्वल मोतियों का हार, स्नान, चन्दन, पुष्प, माल, और

केशों का सँवारना आदि भूषित नहीं कर सक्ता किन्तु उसको केवल संस्कारयुक्त वाणी ही अलंकृत करसक्ती है क्योंकि वस्त्र आभूषण आदि सब नष्ट होनेवाले हैं परन्तु वाणीरूप आभूषण ही सच्चा आभूषण है ॥ १९ ॥

19. Neither bacelets nor necklaces shining with pearls, neither bathing ointments, nor the flowers, braided in the hair adorn man; but only the speech fragrant with learning confers grace on him. All ornaments are sure to perish, but the ornament of speech is the only lasting ornament of man.

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं-
प्रच्छन्नगुप्तं धनं ।
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी-
विद्या गुरूणां गुरुः ॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने-
विद्या परं दैवतं ।

विद्या राजसु पूजिता नहि धनं-
विद्या विहीनः पशुः ॥ २० ॥

विद्या मनुष्य का सुन्दर रूप और छिपाहुआ धन है, विद्या ही भोग यश और सुख देनेवाली है, विद्या गुरु जनों का भी गुरु है, विद्या ही विदेश में भाई के तुल्य :सहायकारिणी है, विद्याही परम देवता है राजों में विद्याही की पूजा होती है धन की नहीं । इतने गुणों की खानरूप विद्या जिस मनुष्य के पास नहीं है वह पशु सम है ॥ २० ॥

20. Knowledge is the man's great beauty and hidden hoard of treasnre, fame and comfort; it is the teacher of teachers. It is a relative in the foreign land. It it the great God. It is honored by kings but not wealth. The man devoid of it is a beast.

क्षान्तिश्चेद्वचेन किं किमरिभिः—
क्रोधोऽस्तिचेद्देहिनां ।
ज्ञातिश्चेदनलेन किंयदि सुहृद्दिव्यौ-
षधैः किं फलम् ॥

किं सर्पैर्यदिदुर्ज्जनाः किमु धनै-
र्विद्याऽनवद्या यदि।
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः सुकविता-
यद्यस्ति राज्येन किम् ॥ २१ ॥

जिस्में शांति है उसे वचन से क्या? जिस्में क्रोध है उसे शत्रु की क्या आवश्यकता है? जिसकी जाति (बिरादरी) है उसे अग्नि से क्या प्रयोजन? जिस के शुभ मित्र हैं उसे ओषधि से क्या? जिस के साथ बुरे मनुष्य रहतेहैं उसका सर्प और क्या बिगाड़ेगा? जिसके पास विद्या है उसे धन की क्या आवश्यकता? जो लज्जावान् है उसे और भूषणों का क्या करना है? इसी प्रकार जो सुन्दर कविता करसक्ता है उस की दृष्टिमें राज्य क्या चीज है ॥ २१ ॥

21. That who has forbearance he needs no talk, and; that who has anger to burn his body needs on enemy and that who hes relationers to support needs no fire to rnin him; that who has a good friend noeds no remedy; that

who is bad man needs no serpent to bite him, he needs no riches, who , possesses unblamable knowledge ; needs no ornaments who possess modesty. And that who possesses the powers of a good poet needs no royalty.

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने
शाठ्यं सदा दुर्जने-
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने
विद्वज्जनेष्वार्जवम् ।
शौर्य्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने
नारीजने धूर्त्तता-
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशला-
स्तेष्वेव लोकस्थितिः ॥ २२ ॥

जो अपने संबंधियों के साथ सरलता, दूसरों पर दया, दुर्जनोंके साथ शठता, सज्जनोंसे प्रीति, राजसभामें विनय, पंडितोंके साथ सीधापन, शत्रुओंके साथ शूरता, पूज्जनों में क्षमा, और (व्यभि-

धारिणी) स्त्रियों के साथ धूर्त्तता से वर्त्तता है वही कलावान् है और यह संसार उसीके आश्रय है ॥२२॥

22. Those who show librality to relationers, commisseration to others, severity to wicked, friendship to good men, politeness to the court of the king, knavery to the women, are honored in this world, being clover in arts.

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं-
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्त्ति-
सत्सङ्गतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् २३

सत्संगति, बुद्धिकी जड़ताको दूर करती, वचन में सचाई को भरती, प्रज्ञा बढ़ाती, दुष्ट कर्म को दूर करती, चित्त को प्रसन्न करती, और सब जगह यशको फैलाती। कहो कौनसी ऐसी भलाई है जिसे सतसंगति सिद्ध नहीं करती ? अर्थात् सभी भलाइयों का स्थान सत्संगति है ॥ २३ ॥

23. Dullness of the understanding is removed by the good company, and good comp-

any showers truth in speech, increases esteem. purifids sin. exhilarates the mind spreads fame abroad. in short what good is there it does not do to men.

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् २४

ऐसे पुण्यात्मा कवीश्वर जो आठों रसों में सिद्धि प्राप्त करचुके हों सबमनुष्यों में उत्तम हैं । क्योंकि उनकी कीर्तिरूप देहको कभी बुढ़ापे और मरणका भय नहीं होता ॥ २४ ॥

24. The great poets who are masters of Rasas trops so on. who perform virtuous acts are happy for they have no fear of decay or death in their incarnate fame.

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा
स्वामी प्रसादोन्मुखः-
स्निग्धं मित्रमवञ्चकः परिजनो
निः क्लेशलेशं मनः ।

आकारो रुचिरः स्थिरश्च विभवो
विद्यावदातं मुखं-
तुष्टे विष्टपहारिणीष्टदहरौ
संप्राप्यते देहिनाम् ॥ २५ ॥

सदाचारी पुत्र, पतिव्रता स्त्री, सर्वकाल प्रसन्न रहनेवाला स्वामी, प्रेमी मित्र, सरलचित्त कुटुम्बी क्लेशरहित मन, सुन्दर स्वरूप, चिरस्थायी ऐश्वर्य और विद्या से शोभायमान मुख उन्हीको प्राप्त होते हैं जिन के ईश्वर और भाग्य दोनों अनुकूल हों ॥ २५ ॥

25. The virtuous son, the chaste affectionate wife, the kind master. loving friends honest relations. calm happy mind, stable wealth, profound speech are obtained by the men with whom the upholder of the world the granter of the desires is pleased.

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे
संयमः सत्यवाक्यम्-

काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथा
मूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनयः
सर्वभूतानुकम्पा–
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः
श्रेयसामेष पन्थाः ॥ २६ ॥

सर्वसम्मत, सब शास्त्रों में एकसा कल्याण का मार्ग यही बताया गयाहै कि जीवहिंसा न करना, पराये धनहरने से मन को रोकना, सत्य बोलना, उचित समय पर यथाशक्ति दान करना, पर स्त्री की बातें न सुनना न करना, तृष्णा के वेग को रोकना, गुरुजन जनों के आगे नम्र रहना और प्राणीमात्र पर दया करना ॥ २६ ॥

26. Desistance for the destruction of life, self-denial in taking the wealth of others. veracity, occasional charity according to mean, silence in talking of the other peoples' wives, check on the passion of averice, reverence to

teachers, mercy to all creatures, an acquaintance with all the systems of philosophy and observance of Vedic rites form the path of happiness.

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः—
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः—
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥ २७॥

नीचलोग किसी विघ्न के भय से किसी कार्य का आरम्भ नहीं करते मध्यम जन (रजोगुणी) आरम्भ कर देते हैं परन्तु विघ्न पड़जाने से बीच में छोड़ देते हैं परन्तु उत्तम (सात्विक) लोग निरन्तर बिघ्नों को सहते हुए भी उस काम को विना पूरा किए नहीं छोड़ते॥ २७॥

27. The vulgar do not begin a thing for fear of obstacle; the middling meeting impediments cease to do it after they have commenced it. but the best men do not give up a work from hand, when once undertaken,

although they are disappointed often and often by unfavourable circumstances.

असन्तोनाभ्यर्थ्याःसुहृदपिनयाच्यःकृशधनः
प्रियान्याय्यावृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम्।
विपद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां—
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् २८

अच्छे पुरुषों को चाहिए कि क्षुद्रजनों से याचना न करें निर्धन मित्रसे कुछ न मांगे किन्तु न्यायानुकूल प्रिय जीविका करें प्राणजाने के भय भी खोटा काम न करें विपत्ति में धैर्य धारण करें इस प्रकार तलवार की धार से भी तेज प्रतिपालन को उपदेश सज्जनों के लिये किसने किया ? किसी ने नहीं यह सज्जनों का स्वाभाविकगुण है ।।२८।।

28. The good man neither ask of the vicious, nor of the good hearted men of little wealth, who maintain their character in adversity and who follow great men's course of life and to whom it is difficult to do evil act even in misfortune and stand in high position ever

in distress; who has taught than this austere conduct harder than the :edge of the sword ? Say Brahma has taught them.

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिल
प्रायोऽपि कष्टां दशा–
मापन्नोपि विपन्नदीधितिरपि
प्राणेषु नश्यत्स्वपि।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवल
ग्रासैकवद्धस्पृहः।
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहता
मग्रेसरः केसरी ॥ २९ ॥

भूंख से दुर्बल, बुढ़ापे से कृश, पराक्रम हीन, शोचनीय दशा को प्राप्त, तेज रहित और जिसके प्राण निकल रहे हों मत्त हस्ती के माथे के मांस की चाह करनेवाला और अभिमानियों में अग्रसर सिंह घास को खायगा अर्थात् कदापि नहीं ॥२८॥

29. The loin the type of pride though

oppressed with hunger, decrepit with age, very weak placed in a painful condition devoid of terror and on the point of death yet does not eat dry grass, but looks for a morsel of lacerated head of the leader of the elephants.

स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं
निर्मांसमप्यस्थि गोः—
श्वा लब्ध्वा परितोषमेति न तु
तत्तस्य क्षुधाशान्तये ।
सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि
त्यक्त्वा निहन्ति द्विपं
सर्वः कृच्छ्र गतोऽपि वाञ्छति जनः
सत्त्वानुरूपं फलम् ॥ ३० ॥

स्नायु और चर्बी में सने हुए मांसरहित बैल की हड्डी के छोटे से टुकड़े को पाकर कुत्ता बहुत प्रसन्न होता है यद्यपि वह हड्डी उस कुत्तेकी भूंख को हर नहीं सक्ती परन्तु सिंह अपनी गोद में

आए हुए गीदड़ को छोड़ देता और हाथी को मारना चाहता है ॥ ३० ॥

30. The dog obtaining a bit of bone without flesh and full with leavings of tendous and marrow becomes gratified though it does not appease its hunger, the loin leaving the jackal fallen within its clutches kills an elephant, in fact all the people even in distress desire to have fruit of their respective powers.

लांगूलचालनमधश्चरणावपातं-
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनञ्च ।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गजपुंगवस्तु--
धीरं विलोकयाति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते ३१

कुत्ता टुकड़ा देनेवाले के आगे पूंछ हिलाता, पैरोंपर गिरता, पृथिवीपर लोटकर मुंह और पेट दिखाताहै । परन्तु हाथी अपने अन्नदाताकी ओर धीरजसे देखकर खाता जाता है । भावार्थ यह कि तुच्छ मनुष्य अपने वृत्तिदाता को सैकड़ों खुशामदें

करता है परन्तु महान् पुरुष बड़ी गम्भीरता से अपने अन्नदाता का धन्यवाद करते हैं ॥ ३१ ॥

31. The dog wags the tail croaches at the feet of his master and laying on the gronnd shows his face and belly but the young elephant slowly casts the eye arround and is given to ent with fiattering words.

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।
परिवर्त्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ३२

इस संसार में वही मनुष्य जन्मा है जिस के जन्मने से वंश की उन्नति हुई हो—नहीं तो परि-वर्त्तन शील संसार में सभी मरते और जन्मते हैं ॥ ३२ ॥

32. Who is not born in this changing world ! but he alone is said to be properly born by whom the family is raised to prosperity.

कुसुमस्तवकस्येव द्वे गती स्तु मन स्विनाम् ।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्य्येत बनेऽथवा३३

पुष्प के गुच्छेकी समान दृढ़ विचारवाले पुरुषों की दो गति होती हैं, या तो सबके सिरपर विराजते हैं या बनही में सूख जाते हैं ॥ ३३ ॥

33. Like the nosegay there are two states of philosophers either to stand on the top of all or to wither in the forests.

सन्त्यन्येऽपि वृहस्पतिप्रभृतयः
सम्भाविताः पञ्चश--
स्तान्प्रत्येष विशेषविक्रमरुची
राहुर्न वैरायते ॥
द्वावेव ग्रसते दिनेश्वरनिशा
प्राणेश्वरौ भास्वरौ ।
भ्रातः ! पर्वणि पश्य दानवपतिः
शीर्षावशेषी कृतः ॥ ३४ ॥

यद्यपि वृहस्पति आदि अन्य पांच ग्रहभी आकाश में हैं परन्तु अधिक पराक्रम की इच्छा करनेवाला राहु उससे वैर नहीं करता हे भ्राता !

देखो अमावस्या और पौर्णमासी को जिस का शिरमात्र शेष रहगया है ऐसा राहु, पूर्ण तेजवाले सूर्य और चद्रन्मा कोही ग्रसता है ॥ ३४ ॥

34. There are in the heaven Brihaspati so on. 5 or 6 respectable planets, but Rahu the gr[illegible]ly of bravery :does not fight with them. Oh brother ! see that this Rahu the master of Daityas having head only left devours sun and moon the masters of day and night at the time of Amavas Purnima.

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थिताम्,
कमठपतिना मध्ये पृष्ठे सदा स विधार्य्यते ॥
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरादहह!
महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतयः ॥ ३५ ॥

शेषजीने अपने फणपर सब भुवनों को धारण किया है उस शेष कोभी कच्छपने अपनी पीठपर धारण किया है कच्छप कोभी समुद्रने बाराह के आधीन किया ॥ अतः महापुरुषों के कर्म और ऐश्वर्य भी बड़े ही होते हैं ॥ ३२ ॥

35. The serpent Seshnag bears on his phan the burden of several worlds, and him the tortoise always bears on his back, and that tortoise is carelessly supported by the ocean oh! how boundless is the working terms of the learned man.

वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश—
प्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गारगुरुभिः॥
तुषाराद्रेः सूनोरहह ! पितरि क्लेशविवशे-
नचासौसम्पापः पयसि पयसां पत्युरुचितः३६

इन्द्र के बज्रसे निकली हुई अग्निसे भस्म होकर मरजाना अच्छाथा, परन्तु अपने पिता हिमालय को दुःख में छोड़ मैनाक को उचित न था कि अपनी रक्षाके लिये समुद्र में जापड़ता॥ ३६ ॥

36. It was better to have his wings cut by the dagger of Indra whose stroke is unbearable than the sinking of Mainak the son of Himalaya in the ocean for the sake of saving his wings leaving his father Hamalaya in danger.

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः—
प्रज्वलति सवितुरिनकान्तः।
तत्तेजस्वी पुरुषः परकृत—
विकृतिं कथं सहते॥ ३७॥

यद्यपि सूर्य्य कान्तमणि अचेतन है तथापि सूर्य्य के किरणरूप चरणसे छुएजाने पर जल उठता है तब सचेतन तेजस्वी पुरुष किसी नीच पुरुष के अनादर को कैसे सहन कर सक्ता है॥ ३७॥

37. How can the great men bear disgrace from others? even the crystle len thoagh lifeless begins to burn in contact with solar rays.

सिंहः शिशुरपि निपतति
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्ववतां न खलु
वयस्तेजसो हेतुः॥ ३८॥

शेरका बच्चाही क्यों न हो वह मदवाले हाथी को मारने के लिए दौड़ता है, क्योंकि तेजस्वियों

का यह स्वभावही है, कुछ तेजका कारण अवस्था नहीं है ॥ ३८ ॥

38. The lion though young falls upon the elephants whose temples are wet with secretion in rattling. The same is also the nature of great men. So age is not the cause of courage.

अथ द्रव्यप्रशंसा ॥

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्त-
स्याप्यधो गच्छतात् ।
शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः
सन्दह्यतां वह्निना ॥
शौर्य्ये वैरिणि वज्रमाशु निपत-
त्वर्थोस्तु नः केवलम् ।
येनैकेन विना गुणास्तृणलव-
प्रायाः समस्ता इमे ॥३९॥

चाहै जाति पाताल को चलीजाय, समस्तगुण उससे भी नीचे चलेजायँ, शील भलेही पर्वत से गिरकर नष्ट होजाय, एवं कुलीनता अग्नि में भस्म होजाय और शूरता के ऊपर बिजली गिरपड़े परन्तु हम को केवल धन से प्रयोजन है जिस के बिना ये गुण तृणकी समान तुच्छ होजातेहैं ॥३९॥

39. Let the tribe go to hell and all the qualities go down lower than hodes, let goodness fall from the ridge of mountrin and let the relations be burnt in fire and let the thunder bolt strike the devil bravery; we care only for wealth without which all those qualities are very much like bit of grass.

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव कर्म–
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव–
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥४०॥

मनुष्य की वही इन्द्रियां हैं, वही बुद्धिहै और वचनभी वही है परन्तु एक धनकी गर्मी न रहने

से मनुष्य क्षणमात्र में और का और ही होजाता है ॥ ४० ॥

40. It is a great wonder that the man when deprived of the pride of wealth becomes a quite different thing in a moment although all the senses, the actions, the sharp intellect, the speech and the person are the same.

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता सच दर्शनीयः,
सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ४१

जिस मनुष्य के पास धन है, वही अच्छे कुल वाला, बुद्धिमान्, शास्त्रवेत्ता, गुणी, वक्ता, और सुन्दर स्वरूपवाला समझा जाता है भावार्थ यह कि सब गुण धन केही आश्रय रहते हैं " ४१ ॥

41. Whosoever possesses wealth is considered of a noble frmily, a learned man, a scholar and eloquent speaker and a beautiful person for all qualities depend upon wealth.

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः
सङ्गात्सुतो लालना-
द्विप्रोऽनध्ययनात्कुलं कुतनया-
च्छीलं खलोपासनात् ।
ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः
स्नेहः प्रवासाश्रया-
न्मैत्री चाप्रणयात्समृद्धिरनया-
त्यागात् प्रमादाद्धनम् ४२ ॥

बुरे परामर्श से राजा, मेलजोल से संन्यासी, लाड प्यार से पुत्र, विद्या न पढ़ने से ब्राह्मण, दुष्ट संतानसे कुल, कुसंग से शील, मद्यपान से लज्जा, देखभाल न करने से खेती, विदेशमें रहनेसे स्नेह, आधीनताके विना मित्रता, अनीतिसे धन सम्पत्ति, विरक्ति और प्रमादसे धन नष्ट होजाता है ॥ ४२ ॥

42. The king is ruined by an ovil counsil, the ascetic by mixing in a bad company, the son by fondness, (love) the Brahman by not

studying the Vedas, the house by a bad son, character by the service of the mean, shame by drinking, a crop by not guarding it, love by residence in a foreign land, friendship by want of affection, prosperity by imprudence, wealth by pride and requisition.

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो, गतयो भवन्ति वित्तस्य । यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ ४३ ॥

दान, भोग और नाश ये तीन मार्ग धन निकलने के हैं । जो मनुष्य धन को न दान करता और न भोगता है उस के धन की तीसरी गति (नाश) होती है ॥ ४३ ॥

43. Donation, enjoyment and loss are the three states of wealth the person who neither gives it in charity nor enjoys it has his wealth full in the third state (loss)..

मणिः शाणोल्लीढःसमरविजयी हेतिनिहतो मदक्षीणोनागः शरदिसरितःश्यानपुलिनाः ।

कलाशेषश्चन्द्रः सुरतमुदिता बालललना। त
न्निम्नाशोभन्तेगलितविभवाश्चार्थिषुजनाः४४

इन की शोभा क्षीणताही में होती है ? सान पर घिसे हुए हीरे की, युद्ध से जीतनेवाले शस्त्र से घायल की, मद से मुक्त हस्थी की, शरदृतु में थोड़े जलवाली नदी की, द्वितीया के चन्द्रमा की, रति से पीड़ित बाल स्त्रीकी और अतिदान से निर्धनहुए पुरुष की शोभा होती है ॥ ४४ ॥

44. Diamond polished on the stone, warrior who has gained a battle elephant whose intoxication has been got over, less watered stream of the winter season, the moon of the day of Duj, yonng woman disfigured of ornament by lashews of night and a poor by money gifts etc, all these are shined by such habits.

परिक्षीणःकश्चित् स्पृहयति यवानां प्रसृतये ।
सपश्चात्संपूर्णो कलयति धरित्रीं तृणसमाम्॥
अतश्चानैकान्त्याद् गुरुलघुतयार्थेषु धनिना।

मवस्थावस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति च ४५

जब मनुष्य अत्यन्त हीन दशा में होता है तब थोड़े से जौ की ही इच्छा करता है परन्तु वही पुरुष जब अति धनाढ्य होजाता है, पृथ्वी को भी तृणसमान गिनने लगता है। इस कारण ये दोनों अवस्था ही पुरुप को छोटा और बड़ा बनाती हैं और बस्तुओं को भी बढ़ाती और घटाती हैं ॥ ४५ ॥

45. When a man is in the poor state he wishes to have half handfull of rice but when the same man becomes rich enough he cares the earth even like bit of grass. With this reason two circnmstances make the man great and small, spreads and conjeals other thing.

राजन्दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्,
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणो,
नानाफलैः फलति कल्पलतेवभूमिः ॥ ४६ ॥

राजन् ! यदि पृथ्वीरूप गौ को दुहा चाहते हो सब वत्सरूपी प्रजा को भली प्रकार पोषण करो । जब यह वत्स भली प्रकार पुष्ट कियाजायगा तभी यह भूमि कल्पलता की भांति नाना प्रकार के फल फूलों से फलैगी ॥ ४६ ॥

46. Oh king! if thon wishest to milk the cow of the earth (kingdom) protect the snbjects like children for they, day and night being well protected the land of brings forth many kinds of fruits like Kalap Ialta in the Heaven.

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रादयालुरपिचार्थपरावदान्या ।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥ ४७ ॥

राजा लोगोंकी नीति कहीं सच्ची, कही झूंठी, कहीं कठोर और कहीं मीठा बोलनेवाली, कहीं हिंसा और कहीं दया करानेवाली कहीं लोभ से भरी और कहीं उदारता से पूर्ण कहीं व्यय और

कहीं संचय कराने वाली वेश्या के समान अनेक रूप धारण करती है ॥ ४७ ॥

47. Like a prostitute King's policy assumes many forms it tells the truth, untruth, *severe or sweet things, it is cruel, kind, selfish*, liberal, prodigal or frugal as suits it.

आज्ञा कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानाम्
दानं भोगो मित्रसंरक्षणं च।
येषामेते षड्गुणा न प्रवृत्ताः
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ॥ ४८ ॥

विद्या, कीर्ति ब्राह्मणोंका पालन, दान करना, भोग और मित्रों की रक्षाकरना, ये छै गुण जिन में नहीं आए उन पुरुषों को राजा के यहां अधिकार पाने का क्या लाभ हुआ ॥ ४८ ॥

48. What is the use on those persons being in a king's service who have not got those six virtues in them viz *learning, fame*, maintenance of Brahmans, generosity, love of enjoyment, the protection of friends.

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकंमहद्वा धनम् । तत्प्राप्नोति मरुस्थलेपि नितरां मेरौ ततोनाधिकम् ॥ तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः, कूपे पश्य पयोनिधावपिघटो गृह्णाति तुल्यं जलम् ॥ ४९ ॥

थोड़ा या बहुत जो कुछ धनादि द्वारा सुख प्राप्त होना विधाता ने मस्तक में लिख दिया है ऊसर भूमि और सुमेरु पर्वतपर जानेसे भी न्यूनाधिक नहीं होसक्ता । इस लिये धीरज करो और धन वालों के पास जाकर वृथा याचना मत करो देखो, घड़ा कूप और समुद्र मेंसे बराबर ही जल ग्रहण करता है ॥ ४९ ॥

49. Whatever wealth little or much is decreed by God to one's lot can be got even in a desert, not a bit more can be obtained on the Meru mountain; therefore do not eccept a mean work in the service of a rich, be contended, don't you see that a pitcher let down either in a well or in ocean holds an equal quantity of water.

त्वमेव चातकाधारोऽसीति केशां न गोचरः।
किमंभोदवरास्माकं कार्पण्योक्तिःप्रतीक्ष्यते५०

हे जलद !. कौन नहीं जानता कि तुमही चातक पक्षियों के आधार हो, फिर भला हमारे दीन वचनों की क्यों प्रतीक्षा कर रहे हो ? ॥ ५० ॥

50. Oh best cloud ! who is it that does not know that you are the support of Chatak; why do yon wait for our poor solicitation.

रेरेचातक सावधानमनसा मित्रक्षणं श्रूयता, मम्भोदा बहवो हिसन्ति गगने सर्वे पि नैतादृशाः । केचिद्वृष्टिभिरार्दयन्तिवसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा, यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥ ५१ ॥

अरे पपीहा ! सावधान होकर हमारा वचन सुन ले, आकाश में बहुत से बादल हैं परन्तु सब समान नहीं हैं । उन में से कोई तो जल वर्षा कर पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं और कोई २ वृथाही

गरजते हैं इस कारण, हे मित्र! सभी के आगे दीनता से जल के लिये मत पुकार ॥ ५१ ॥

51. Oh friend Chatak! listen to me for a moment with undivided attention; though many clouds live in tho sky yet all are not alike, only some wet the earth with rain, but others thunder in vain; hence you should not make application before all that you happen to sec

अकरुणत्वमकारण विग्रहः
परधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता
प्रकृति सिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥ ५२ ॥

निर्दयीपना, विना कारण वैरकरना, पराए धन की इच्छा रखना, पराई स्त्रीको चाहना, सज्जनों की बात न मानना और कुटुम्ब की बड़ाई न देख सकना ये छै अवगुण दुष्ट मनुष्यों में स्वाभाविक होते हैं ॥ ५२ ॥

52. Cruelity. groundless quarrel, desire for the wife aud wealth of others, nonfor-

bearance towards good men and relations are natural to the evil minded.

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाभूषितोऽपि सन्।
मणिनालंकृतःसर्पः किमसौ न भयंकरः ५३

दुर्जन मनुष्य विद्वान् होने पर भी त्याज्य है क्योंकि मणि से भूषित सर्प क्या भय देनेवाला नहीं होता ? ॥ ५३ ॥

53. A vicious man though adorned with knowledge, should be avoided for is not the serpent decorated with jewels fearfull.

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दम्भः शुचौ कैतवम्, शूरे निर्घृणता मुनौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि । तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे, तत्कोनाम गुणो भवेत्सगुणिनां यो दुर्जनैर्नांकितः ५४

दुर्जन, लज्जावान्को शिथिल, व्रतीको दम्भी, पवित्र को छली, शूर को दयाहीन, थोड़ा बोलने वालेको मूर्ख, मीठा बोलनेवाले को दीन, तेजस्वी

को अहंकारी, वक्ताको बकवादी और शान्तचित्त को निकम्मा कहते हैं । गुणियों का कोई गुण ीं जिस पर दुर्जनों ने कलंक न लगाया हो ॥ ५४ ॥

54. What virtue of the good is there that has not been blamed by the bad ? modesty is thought as dullness, perseverance in a vow as hypocrisy, purity as humbug, bravery as cruelty, silence as stupidity, sweet speech as humility, fame as pride, eloquence as garrulity, and tranquility as weakness.

लोभश्चेद् गुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः, सत्यं चेत्तपसा च किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेनकिं । सौजन्यं यदि किं गुणैः स्वमहिमा यद्यस्ति किं मंडनैः, सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥ ५५ ॥

यदि मनुष्य में लोभ है तब और अवगुण हों या नहीं, जो निन्दक है उसे और पापों से क्या

प्रयोजन ? सत्यवादी को अन्य तपों से क्या लाभ ? शुद्ध मन वाले को तीर्थों से क्या फल ? सज्जनों को मित्र एवं कुटुम्बियों की क्या कमी है ? जिन का यश फैलरहा है उन्हें अन्य आभूषणों का क्या करनाहै ? जिनमें विद्या है उन्हें धनसे क्या लाभ ? और जिन का अपयश होरहा है उन को मृत्यु से क्या अर्थात् वे जीवितही मरे के समानहैं ॥ ५५ ॥

55. No vice is greater than avarice, no sin is greater than cruelty, no asceticism is greater than veracity, no virtue is greater than good nature, no holy place is better than pious mind, no decoration is greater than magnanimity.

शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी,
सरो विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वाकृतेः ।
प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गतः सज्जनो,
नृपाङ्गणगतःखलो मनसि सप्त शल्यानिमे५६

भर्तृहरि जी कहते हैं कि ये सातबातें हमारे

मन में कांटेके समान खटकती हैं । १ दिनका मलीन चन्द्रमा २ यौवनहीन नारी ३ कमलहीन तालाव ४ सुन्दर स्वरूपवाला मूर्ख ५ धन का लोभी राजा ६ निर्धन सत्पुरुष ७ और राजसभा में दुष्टों का वास ॥ ५६ ॥

56. The moon shine of light in the day, the women of decayed beauty, the lake destitute of letuses, the illiterate beautifnl person, a covetious master, a poor good man, clown in the court of a king, are the seven thorns so to speak in my mind.

न कश्चिच्चंडकोपानामात्मीयोना मभूभुजाम् ।
होतारमपिजुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ५७

जिस प्रकार अग्नि हवन करनेवाले को भी छूने से जलादेती है उसी प्रकार महा क्रोधी राजाओं काभी कोई मित्र नहीं होता ॥ ५७ ॥

57. The kings of firy temper are friends to no one just as the fire caught at a sacrifice burns the sacrificer himself.

मौनान्मूकः प्रवचनपटुश्चाटुलो जल्पको वा
धृष्टः पार्श्वे वसति च तदादूरतश्चाप्रगल्भः।
क्षांत्याभीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ५८

सेवक चुप रहने से गूंगा, बोलनेसे बावला या बकबादी, पास रहनेसे ढीठ, दूर रहनेसे बुद्धिहीन, क्षमा करने से डरपोक, और न सहारने से नीच कुल का समझाजाता है। इससे प्रतीत होता है कि सेवा धर्म इतना कठिन है, कि योगीजनों से भी नहीं निभसक्ता॥ ५८॥

58. The obligations of service are so difficult as to be unaccomplished by Yogies; for, a man is called dump from silence, arrogant from cleverness in speaking intrusive from keeping close at a side, unready from keeping at a distance, timid from forbearance and ingn oble from inability to bear with.

उद्भासिताखिलखलस्य विशृंखलस्य

प्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृत्तेः ।
दैवादवाप्तविभवस्य गुणद्विषोऽस्य
नीचस्य गोचरगतैः सुखमास्यते कैः ५६

जो अनेक दुष्टों को उभारनेवाला, किसी की बात न मा..नेवाला, जिसके पूर्वजन्म कृत अनेक, पाप प्रकट होरहे हैं, दैवयोग से सम्पत्तिवाला भी हैं, सद्गुणों से वैर रखनेवाले ऐसे नीच मनुष्य के वश में या पास रहकर किस को सुख प्राप्त होसक्ता है ॥ ५९ ॥

Who has obtainedease in the asylum (company) of the vile man who reveals all waggery in himself who is unfettered by law whose tendency of evil doing of previous life is awakened, who has got wealth by chance and who hates virtue ?

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरावृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्ना

छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ६० ॥

मध्यान्ह से पहिले जिस प्रकार छाया पहिले बड़ी और वाद को छोटी होती जाती है इसी प्रकार दुर्जन की मित्रता का हाल है। परन्तु सत्पुरुषोंकी मित्रता मध्यान्होत्तर छायाकीसमान प्रथम छोटी और बाद को बढ़ती जाती है ॥ ६० ॥

60. The friendship of good and bad men is like the fore and after noon shadow during the day which increases in the beginning, but gradually declines and which is little before but afterwards increases much.

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहित वृत्तीनाम् । लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारण वैरिणो जगति ॥ ६१ ॥

हिरन, मछली और सज्जन, घास, जल और सन्तोष द्वारा अपना २ जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु व्याध धीवर और दुर्जन अकारणही इन से वैर रखते हैं ॥ ६१ ॥

61. The deer, fish and the virtuous man are contented with grass, water and have necessaries respectively. Still in the world the hunter, the angler and the rogue are their enemies without cause.

वाञ्छासज्जनसंगमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता, विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद्भयम् । भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः खले, एतेयेषुवसंति निर्मलगुणास्तेभ्योनरेभ्योनमः ॥ ६२ ॥

जो मनुष्य सत्संग में रुचि, दूसरे के गुणों में प्रेम, बड़ों से नम्रता, विद्या में व्यसन, अपनीही स्त्री से प्रेम, लोक निन्दाका भय, ईश्वर में भक्ति, कुसंग का त्याग और मन रोकने की शक्ति रखते हैं उन को हमारा प्रणाम है ॥ ६२ ॥

62. We bow to those men who possess these good qualities; desire for the company of good men, a love :for the qualities of others, and obedient to great man and have affection

with their own wife, and fear from "lokninda, regard for God and a power to oppress their own feelings and disdain from the bad company

विपदि धैर्यमथाभ्युदयेक्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥६३॥

निम्नलिखित ६ गुण महात्माओं में स्वाभाविक होते हैं १ विपत्ति में धीरज २ अभ्युदय में क्षमा ३ सभा में बाणी की चतुराई, ४ युद्ध में पराक्रम, ५ यश में इच्छा ६ शास्त्र में व्यसन॥ ६३॥

63. Fortitude in adversity, and moderation in prosperity, elopuence in assemblies, and courage in the fields, desire of fame, and attachment to the study of sacred Shastras are the natural perfections of great minds.

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते संभ्रमविधिः।
प्रियङ्कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्यपकृतेः॥

अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभवसारः परकथाः।
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ६४

१ दान प्रकट न करना, अभ्यागत का आदर करना, भलाई करके मौन रहना, दूसरेके उपकार को सभा में कहना, धन पाकर अभिमान न करना, दूसरे की चर्चा में उस की बुराई को बचा कर कहना ये तलवार की धार के समान नियम सत्पुरुषों को किसने सिखाए हैं? ॥ ६४ ॥

64. Who has tanght the saints (this brat the manner of department) as difficult as walking on the edge of a sword namely charity in privacy, hospitality to guests, silence after beneficience, acknowledging the gratitude of others in a public assembly, humility in affluence and inoffensive talk about others.

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता
मुखेसत्यावाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्
हृदिस्वस्था वृत्तिः श्रुतमधिगतैकव्रतफलम्
विनाऽप्यैश्वर्येणप्रकृतिमहतांमण्डनमिदम्६५

दान देने से हाथ, गुरुओं के चरणों में झुकाने से शिर, सत्य कहने से मुख, बड़े पराक्रम से दोनों बाहु, शुद्धवृत्ति से हृदय और शास्त्र के श्रवण से कान बिना सम्पत्ति केही, प्राकृतिक आभूषणों से विभूषित होते हैं ॥ ६५ ॥

65. It is an ornament of naturally great men without wealth that their hand is decked with generosity, their head with a nod to the feet of the teacher, their mouth with true speaking, their both arms with matchless prowess, their mind with pure thought and their ear with hearing the sacred shastras.

सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैल शिलासंघातकर्कशम् ६६

महापुरुषों का चित्त सम्पत्ति में कमल से भी कोमल और बिपत् समय में पर्वत की बड़ी शिला के समान कठोर होजाता है ॥ ६६ ॥

66. The mind of great man becomes soft as a lotus in the time of prosperity but in misfortune hard as a ridge adamantine rocks.

संतप्तायसिसंस्थितस्यपयसीनामापि न ज्ञायते मुक्ताकारतयातदेवनलिनीपत्रस्थितं राजते। स्वात्यांसागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते। प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणाः संसर्गतोदेहिनाम् ॥ ६७ ॥

गर्म लोहेपर बूंद गिरकर नष्ट होजाती है यदि वही बूंद कमलपत्र पर गिरे तब मोती के समान शोभित होती है और यदि स्वांति नक्षत्र में सीप में गिरे तब मोती बनजाती है। इससे यह सिद्ध हुआ कि अधम मध्यम और उत्तम गुण प्रायः संग से होते हैं ॥ ६७ ॥

67, Generally the low and the middle and the high qualities of people are obtained from company; as for instance on trace of water remains when put on hot iron but when placed on a lotus leaf it shines like a pearl yan when dropped into the cavity of an oyster at the time of Swati it becomes a real pearl.

यः प्रीणयेत्सुचरितैः पितरं स पुत्रो

यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियंय
देतत्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥६८॥

अच्छे कामों से अपने पिता को प्रसन्न रखने वाला पुत्र, सर्वदा अपने भर्ता का हित चाहने वाली स्त्री और सुख दुःख में बराबर सहायक रहने वाला मित्र, ये तीनों संसार में उसी को मिलते हैं जिसने पूर्वकालमें बहुत पुण्यकियाहै॥६८॥

68. He is the son who pleases the father with his good conduct, she is the wife who has at heart the good of her husband, and he is the friend, who is ever the same whether in prosperity or in adversity. These three are only obtained in the world by the lucky.

एको देवः केशवो वा शिवो वा-
एकं मित्रं भूपतिर्वायतिर्वा ।
एको वासः पत्तने वा वने वा-
एका नारी सुन्दरी वा दरी वा ॥ ६९ ।

एक देवता का उपासक बनना चाहिये चाहैं विष्णु होंं वा शिव, एक मित्र करना चाहिये चाहै राजा हो वा संन्यासी, एक जगह रहना चाहिये चाहे नगर हो वा बन और एक स्त्री से प्रीति करना चाहिये चाहै सुन्दरी स्त्री हो वा पर्वत की गुफा हो ॥ ६९ ॥

69. Worship only one lord whether Shiv or Krishna, have friendship with one man whether with king or with a hermit, live at one place whether in a willage or in a jungle, love with one lady whether beautiful or ugly.

नम्रत्वे नोन्नमन्तः परगुणकथनैः स्वान् गुणान् ख्यापयन्तः, स्वार्थान् सम्पादयन्तो विततप्रियतरारम्भयत्नाः परार्थे । क्षान्त्यैवाऽऽक्षेपरूक्षाक्षरमुखरमुखान् दुर्जनान् दूषयन्तः, सन्तः साश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्चनीयाः ॥ ७० ॥

जो महात्मा नम्रता से ऊंचे होते हैं, पराए

गुणों के वर्णनही से अपने कार्य्य को सम्पादन करते हैं और कठोर वाक्यों से बुराई करने वाले दुष्टों को अपनी क्षमाही से दूषित करते हैं ऐसे आश्चर्य्य कर्म्मा महात्मा किससे नहीं पूजेजाते? ७०॥

70. By doing respect to others, themselves are respected. by saying the virtue of the others, their own virtues are spread, by doing the works of others in a good manner their own works are goodly done, and blames the bad man by forbearence. The saints of such like good acts are by whom not respected.

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमे
नवाम्बुभिर्भूमि विलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥ ७१ ॥

जिस प्रकार फलों से लदे हुए वृक्ष झुकजाते हैं और नवीन जल से भरे हुए मेघ पृथ्वी की ओर नमते हैं, उसी प्रकार सज्जन भी ऐश्वर्य पाकर नम्र होजाते हैं क्योंकि यह परोपकारियों का स्वभावही है ॥ ७१ ॥

71. The natnre of the benevolent is that being good natured, they are humble even in prosperity just as the trees bend down with the weight of fruits or as the clouds hang down with the excess of rain water.

श्रोत्रंश्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्नतु कङ्कनेन। विभातिकायः करुणापराणां परोपकारैर्नतुचंदनेन ॥ ७२ ॥

कानों की शोभा शास्त्रों के श्रवण से है कुण्डल से नहीं, हाथोंकी शोभा दानसे है कंकणसे नहीं और करुणापरायण मनुष्यों के शरीर की शोभा परोपकार करनेसे है चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्य लगानेसे नहीं ॥ ७२ ॥

72. The ear is beautified by hearing the Shastras not by wearing earrings, the hand is beantified by the gifts and not by armlets the body is beautified by doing good to others, and not by painting sandal.

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥७३॥

जो मित्र अपने मित्र को पापकर्म से रोकता, उसके हित के लिये उपदेश करता, गुप्त बातों को छिपाता, गुणों को प्रकट करता, विपत्ति समय में भी साथ देता और अवसर प्राप्त होने पर यथाशक्ति धन देता है उसको संत लोग सुमित्र कहते हैं॥ ७३ ॥

73. Saints say that the true of the virtues friend are, that he wards off evils, works for good, hides secrets, reveals virtues, does not desert in misfortune, supports iu famine.

पद्माकरं दिनकरो विकची करोति-
चन्द्रोविकाशयति कैरवचक्रवालम्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयंपरहिते सुकृताभियोगः॥७४॥

जिस प्रकार सूर्य्य विना प्रार्थना कियेही कमल को खिलाता है, चन्द्रमा भी कुमुदिनी के समूह

को स्वयं प्रफुल्लित करता है और मेघ भी बिना मांगेही जल बर्सता है उसी प्रकार सत्पुरुष भी बिना कहेही परोपकार करने में दत्त चित्त रहते हैं ॥ ७४ ॥

74. Saints work for the good of others of their own accord; juse as the sun, the lord of the day, opens the buds of a multitude of lotuses, the moons those of a field of water lillies, and clouds shower unsolicited.

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्यये। सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये॥ तेऽमी मानुषराक्षसाः पराहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये। येनिघ्नन्ति निरर्थकं पराहितं ते केन जानीमहे ॥ ७५ ॥

इस संसारमें वे सत्पुरुष हैं जो स्वार्थ को त्याग कर पराया कार्य सिद्ध करते हैं। साधारण मनुष्य अपना काम न बिगाड़कर दूसरों का हित साधन करते हैं मनुष्यों में राक्षस वे हैं जो अपने काम

के लिये दूसरों का कार्य नष्ट कर देते हैं। और जो विना प्रयोजन दूसरों का काम बिगाड़ते हैं उन का नाम हम भी नहीं जानते कि वे कौन हैं ? ॥ ७५ ॥

75. The best men are those who are engaged in the interest of others without the consideration of self, the middling are those who are engaged in the good of others without the opposition of their own interest and they are devils who destroy the interest of others for their own good, but we do not know what we call them who destroy the interest of others for nothing.

क्षीरेणात्मगतोदकायहिगुणादत्ताः पुराते-ऽखिलाः, क्षीरेताहमवेक्ष्य तेन पयसास्वात्मा कृशातौ हुतः। गन्तुं तावकमुन्मनास्तदभवदहष्ट्वा तु मित्रापदम्, युक्तं तेन जलेन शाम्याति सतां मैत्री पुनस्तस्त्वीहशी॥ ७६॥

दूध ने अपने साथ मिले हुए जल रूपी मित्र को अपना सब गुण और रूप देदिया, दूध को

जलता देख जल ने (मानों उस की रक्षा के लिये) अपने को अग्नि में जला दिया दूधने भी मित्र को इस विपत्ति में देख स्वयं अग्नि में गिरना चाहा परन्तु जल के छींटे पाकर अपने मित्र को आया समझ फिर ठण्डा होगया ठीक है सज्जनों की मित्रता ऐसी ही होती है ॥ ७६ ॥

76. The milk placed on fire to boil gives all its qualities to the water that comes to it, and the water perceiving the milk burn sacrifices itself into the fire the milk seeing the trouble of its friend wishes to go into the fire, but being again united with it, it subsides. This is the model of the friendship of the good.

इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा।
मितश्च शरणार्थिनां शिखरिणांगणाः शेरते।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकै
रहोविततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥७७॥

समुद्रमें एक ओर शेषनाग पर विष्णु भगवान सोरहे हैं, दूसरी ओर दैत्यराज निवास करता

है एक ओर शरणागत पर्वतों के समुदाय पड़े हैं दूसरी ओर वड़वानल धधकरहा है परन्तु आश्चर्य्य है, कि इतने परभी समुद्र का महान पराक्रमी और भार सहने वाला शरीर अचल और अकम्प है ॥ ७७ ॥

77. There sleeps Vishnu lying on sheshnag in the ocean and also there are many mountains in the bottom of it and moreover there is the fire in it which givss heat to the water of the ocean, but notwithstanding all these things he never hesitates. This shows that the ocean is a great body capable of bearing burden, so this is the way of the good man.

तृष्णां छिन्धि भज क्षमां जहि मदं पापे रतिं मा कृथा, सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनान्। मान्यान्मानय विद्विषोप्यनुनय प्रख्यापय स्वान्गुणान्, कीर्तिंपालय दुःखितेकुरु दयामेतत्सतां लक्षणम् ॥७८॥

तृष्णा को काटो, क्षमाको धारण करो, मद्को

त्यागो, पापकर्म से बचो, सच बोलो सज्जनों के मार्ग पर चलो, विद्वानों की सेवा करो, मान्यपुरुषोंका सत्कार करो, शत्रुओं कोभी प्रसन्न रक्खो गुणों को विख्यात करो, यशका पालनकरो, और दुखियों पर दया रक्खो। बस यही सत्पुरुषों के लक्षण हैं ॥ ७८ ॥

78. The characteristics of the good are to destroy desire, to observe forgiveness, to give up pride, not to set mind on sin, to speak the truth, to wend the way of righteousness, to support earning. to respect merit. to love even the enemy. to reveal others'. virtnes. to guard othera' fame, and to have mercy upon misery.

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून्पर्वती कृत्य नित्यं
निजहृदिविकसन्तःसान्तिसन्तःकियन्तः७६॥

ऐसे महात्मा जिनके मन वचन और शरीर में पुण्यरूपी अमृत भराहो और जो त्रिलोकी के

तृप्त करनेवाले एवं दूसरे छोटे से गुणों कोभी बड़ा मान पर प्रसन्न होते हों इस संसार में बहुत कम हैं ॥ ७९ ॥

79. How many are the saints who are full of the nectar of holiness of the mind, speech and the body who please the three world by a series of good acts, who show the little virtne of the other men like mountain, and who are happy in their own mind ?

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्तएव ।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोलनिम्बकुटजाअपिचन्दनाःस्युः ॥८०॥

उस सुमेरु और कैलाश पर्वतकी क्या बड़ाई है जिस के आश्रित वृक्ष जैसे के तैसे बने हुए हैं हम तो मलयाचल की प्रशंसा करते हैं कि जहां कंकोल निम्ब जैसे कड़वे वृक्ष भी चन्दन होजाते हैं ॥ ८० ॥

80. What is the use of those gold and silver mountains whose trees remain as trees, we admire the Malayachal where the Kankal,

Nim and other Kutaj etc. trees decome sandal wood.

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा-
नभेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां बिना न प्रययुर्विरामम्-
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः॥ ८१॥

यद्यपि देवताओं ने समुद्र में से अनेक अमूल्य रत्न पाए परन्तु समुद्र का मथना नहीं छोड़ा और भयंकर विष से भी डरकर अपना मनोरथ नहीं त्यागा यावत् अमृत नहीं मिला तावत् उस काम को नहीं छोड़ा इससे सिद्ध होता है कि धीरलोग अपने मनोरथ को विना सिद्ध किये विश्राम नहीं लेते ॥ ८१ ॥

81. The wise do not desist from the ascertained truth; hence the gods were not satisfied with valuable gems; nor vere they afraid of tne danger of very venomons poison; nay they did not content themselves of short nectar.

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्य-ङ्कशयनम्, क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः । क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो, मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखं ॥ ८२ ॥

कहीं भूमि परही और कहीं पलँग पर सोते कहीं शाक आदि भोजन कर निर्वाह करते और कहीं चावल आदि उत्तम पदार्थों का भोजन करते, कहीं गुदड़ी आदि पहिनते और कहीं सुन्दर वस्त्र धारण करते हैं । निदान, कार्य्य सिद्धि चाहनेवाले विचार शील पुरुष सुःख और दुःख की पर्वाह नहीं करते ॥ ८२ ॥

82. A sensible man desirous of doing a thing does not regard either pleasure or pain. He sometimes makes his bed on the ground at others he sleeps on couch; sometimes his food is only herbs at others he eats nice cooked rice, sometimes he wears a guilted or a tattered garment, at others he wears a splendid dress.

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो, ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः । अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता, सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥ ८३ ॥

ऐश्वर्य्य की शोभा सज्जनता, शूरता की दीन वचन, ज्ञानकी शान्ति, विद्या की नम्रता, धनकी सुपात्र को दान, तपस्या की क्रोध न करना, प्रभुता की क्षमा और धर्म्म की शोभा छल रहित होना है परन्तु शील सब गुणों का कारण और परम आभूषण है ॥ ८३ ॥

83. Good nature is the best ornament of power and affluence; measured speech of bravery; tranquility of knowledge; humility of erudition, donation of the deserving of wealth; absence of anger of asceticism; forgiveness of authority: undeceitfulness of virtue but good conduct, the cause of all is the greatest ornament of all.

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥८४॥

नीति के जाननेवाले चाहें निन्दा करें या स्तुति, धन आए या जाए और चाहे आजही प्राणान्त हो या कल्पान्तर में परन्तु धीरपुरुष न्याय के मार्ग को त्याग कर एक पगभी विरुद्ध नहीं चलते ॥ ८४ ॥

84. The wise do not refrain from the path of justice, altough politions may blame or praise them, wealth may come or depart as it likes, and they may lose the life in a moment or after ages.

भग्नाशस्य करण्डपीडिततनाम्लानेन्द्रियस्य क्षुधा कृत्वाऽऽखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः। तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ

तेनैव यातःपथा। लोकाः पश्यत दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणं ॥ ८५ ॥

एक सर्प पिटारे में वन्द था और भूख के कारण वड़ा व्याकुल था उसको अपने जीवन की आशा नहीं थी परन्तु दैवयोग से एक चूहा उस पिटारे में छेद करके सर्प के मुखमें जागिरा। सर्प उसको खा कर तृप्त होगया और उसी छिद्र द्वारा निकल गया। सो हे मनुष्यों! देखो प्रारब्ध ही मनुष्य की वढ़ती और घटती में कारण है ॥८५॥

85. Oh people ! mind ! that the fate is the soule cause of prosperity and ruin a serpant which had no hopes whose body was oppressed by the basket holding it and whose sense became languid by hunger had a manse cutting hole in the basket full into its month of its own accord at right and gratify itself with its flesh escaped by that hole.

पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः ।
प्रायेणसाधुवृत्तानामस्थायिन्योविपत्तयः ८६

जैसे हाथसे नीचे गिराई हुई गैंद फिर ऊपर उछलती है उसी प्रकार सत्पुरुषों की विपत्तियां भी स्थिर नहीं रहतीं ॥ ८६ ॥

86. As a boll fijes off when toasted by hand, the trouble of the good natured generally pass away.

आलस्योहिमनुष्याणां शरीरस्थो महान्रिपुः
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कुर्वाणोनावसीदति८७

आलस्य और उद्यम मनुष्यों के देहमें क्रमसे शत्रु और मित्र हैं। उद्यमही वह चीज़ है जिसके कारण मनुष्य कभी दुःखित नहीं होता ॥ ८७ ॥

87. Idleness is the great enemy in the body of man and there is no friend equal to energy by which man does not sink into sin.

छिन्नोऽपिरोहतितरुःक्षीणोऽप्युपचीयते
पुनश्चन्द्रः। इति विमृशन्तः संतः संतप्यन्ते न
ते विपदा ॥ ८८ ॥

काटाहुआ वृक्ष काल पाकर फिर बढ़ता और

फैलता है। क्षीण चन्द्रमा भी फिर वृद्धि को प्राप्त हो पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार विचारते हुए बुद्धिमान्जन विपत समय में नहीं घबड़ाते हैं ॥ ८८ ॥

88. The trees grow again when cut down the moon though decreased becomes full again. so the wise man thinking these never takes it ill when in danger and misery.

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं बज्रं सुराः सैनिकाः स्वर्गो दुर्गमनिग्रहः किल हरेरैरावतो वारणः। इत्यैश्वर्यबलान्वितोऽपि बलिभिद्भग्नः परैः संगरे, तद्युक्तं ननु दैवमेवशरणं धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥ ८९ ॥

जिस इन्द्र के यहां बृहस्पति जैसे मंत्री वज्र शस्त्र, देवसेना, स्वर्ग जैसा किला हरिसहायक और ऐरावत हस्ती सवारीमें परन्तु तबभी इन्द्र शत्रुओं से युद्ध में हारगया इससे यही सिद्ध

होता है कि प्रारब्धही सब बातों का कारण है और वृथा पौरुष को धिक्कार है ॥ ८९ ॥

89. Indra although had his minister Brihaspati and the Wajra the weapon and the forces of the gods the paradise as his fort and Irawat as his riding elephant, but at last used to become unsucessful in the battles. Therefore fortune is only to be served and labour can do nothing, fie to it.

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।
तथापिसुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता ॥९०

कर्मानुसार मनुष्य फल भोगता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही होती है तथापि बुद्धिमान् मनुष्य को उचित है कि वह विचार पूर्वक काम करै ॥ ९० ॥

90. Although the fruits of labour depend upon the past actions of man and the intellect follows actions yet the wise should do nothing without consideration.

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः संतापितो मस्तके, वाञ्छं देशमनातपं विधिवशात्ताल स्य मूलं गतः । तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः, प्रायोगच्छतियत्र भाग्य रहितस्तत्रैव यान्त्यापदः ॥ ९१ ॥

कोई गंजा पुरुष सूर्य्यकी किरणों से तप्त होकर छायामें बैठने के लिये ताड़के वृक्षके नीचे गया प्रारब्ध देखिये वहांभी उस वृक्ष के फल के गिरने से उसका शिर फूटगया । प्रायः भाग्यहीन पुरुष जहां जाताहै विपत्ति भी उसके साथ जातीहै९१॥

9I. A bald person being heated in the sun's rays and desiring to go in a shaded spot happened to go beneath a palmtree, but when there the fall of a largs fruit struck his head with a great noise, for wherever goes an unfortunate man misfortune indeed follows him.

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्

गजभुजङ्गमयोरपि बन्धनम्

मतिमतां च विलोक्य दरिद्रताम्
विधिरहो बलवानिति मे मतिः ॥९२॥

चन्द्रमा और सूर्य्य को राहुसे ग्रसित देखकर, हस्ती और सर्प को भी बंधनमें देखकर और बुद्धिमान् मनुष्यों को दरिद्री देख मेरी यही सम्मति है कि प्रारब्धही बलवान् है ॥ ९२ ॥

92. Having seen the sun and the moon eclipsed or captured by Rahu, the elephant and the snake caught and the wise man poor, I am convinced that fate is powerfull.

सृजति तावदशेषगुणाकरं
पुरुषरत्नमलङ्करणं भुवः
तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चे
दहह कष्टमपण्डितता विधे ॥ ९३ ॥

ब्रह्मा किसी पुरुषको सर्वगुणाकर और भूमिका एकमात्र भूषण बनाता है परन्तु उसका शरीर वह क्षण भंगुर बनाता है बस इसी से ब्रह्मा की मूर्खता प्रतीत होती है ॥ ९३ ॥

93. The God makes the Jewel of man the respectable of all qualities to be the ornament of the earth still he makes him transitory. Alas ! it is a pitiable ignorence of the creator.

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्। नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ॥ धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्। यत्पूर्वं विधिनाललाट लिखितं तन्मार्जितु कःक्षमः ९४

यदि करीलके वृक्षमें पत्ते नहीं लगते तब इस्में वसन्त ऋतु का क्या दोष ! यदि दिन में उल्लूको नहीं दीखता तब इस्में सूर्य्यका क्या अपराध ? और यदि चातक के मुंह में बूंद न गिरे तब मेघका क्या दूषण है ? इससे यही सिद्ध होताहै कि जो कुछ विधाता ने मस्तक में लिख दिया है उसे कोई भी नहीं मेट सक्ता ॥ ९४ ॥

94. Who can deface what is written by od upon the forehead before his birth ? what it

the fault of the spring if no leaf in the tree of Kareer sprouts. How can the sun be blamed if the owl does not see in the day ? how can the cloud be blamed if no drop of rain fall into the mouth of the cuckoo.।

नमास्यामो देवान्ननु हंतविधेस्तेऽपि वशगा
विधिवन्द्यः सोऽपि प्रत्तिनियतकर्मैकफलदाः
फलं कर्मायत्तं किममरगणैः किंच विधिना
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपिनयेभ्यःप्रभवति ९५

हम, देवताओं को नमस्कार नहीं करते क्यों कि वे भी (स्वाधीन नहीं प्रत्युत) विधाता के आधीन हैं और विधाता को भी नमस्कार नहीं करते क्योंकि वहभी हमारे नियत कर्मों का ही फल देसक्ता है। जब फल कर्माधीन है तब देवता और विधाता इसमें क्या कर सक्ते हैं। इस लिये हम कर्मदेव को ही नमस्कार करते हैं जिन को उलट पलट करनेमें ब्रह्माभी समर्थ नहीं।।९५।।

95. We bow to gods; but they are also ubject to the creator. The God is to be bowed;

but he too rewards according to the destined actions Rewards depending on actions, what of the creator? We therefore bow to the actions alone than which the creator is not more poverful.

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्ड भाण्डोदरे, विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासङ्कटे। रुद्रो येन कपालपाणिपुट-के भिक्षाटनं कारितः, सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥ ९६ ॥

जिस कर्म के प्रभावसे ब्रह्मा निरन्तर कुम्हारकी भांति संसार रचना में लगा ही रहता है और विश्नु बार २ अवतार लेकर संकट में पड़ता है, रुद्र हाथ में खप्पर लिये भिक्षा मांगता फिरता है और जिस के प्रभाव से सूर्य्य नित्य आकाश में घूमता फिरता है उस प्रबल कर्म्म को हम नमस्कार करते हैं ॥ ९६ ॥

96. Bow to the actions which engaged Brahma like the potter in the creation of the

earth, and put Vishnu in the trouble of suffering the diffculty of 10 Avtars and gave to Rudra the troubble of begging alms from door to door with a cup in hand and also put Surya in the circle of rotation in the sky.

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलम्,
विद्यापि नैव न च यत्नकृतापि सेवा ।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः ॥९७॥

मनुष्य के लिये सुन्दर स्वरूप, श्रेष्ठ कुल, शील विद्या और प्रयत्न से की हुई सेवा कुछ फल दायक नहीं होती केवल पूर्व तप से सञ्चित किये कर्म ही मनुष्य को समय पर वृक्ष की समान फल देते हैं ॥ ९७ ॥

97. Neither the man's beautiful form, family noble good conduct, sound knowledge. nor the service done with great care is of any use, his lot alone acquired by precious merits eqars fruits like a tree in proper season.

वने रणे शत्रु जलाग्निमध्ये
महार्णवे पर्वतमस्तके वा
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि ॥९८॥

वन में रण में शत्रुओं जल और अग्नि के मध्य में; महा सागर पर्वत की चोटी पर, सोते हुए प्रमादावस्था में तथा सङ्कट में मनुष्य की केवल पूर्व कृत पुण्य (कर्म्म)-ही रक्षा करते हैं ९८॥

98. The good actions done in a previous life protect us in a wood, in a battle; in the midst of enemies, in water, in a fire, in the ocean, on the tops of mountains, in sleep in intoxication or in trouble.

या साधूंश्च खलांकरोति विदुषो मूर्खान्हितां द्वेषिणः । प्रत्यक्षं कुरुते परोक्षममृतं हालाहलं तत्क्षणात् ॥ तामाराधयसत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलंवाञ्छितम् । हेसाधोव्यसनैर्गुणेषुविपुले ष्वास्थांवृथामाकृथाः॥९९॥

जो सुकर्म बुरों को अच्छा मूर्खों को विद्वान् शत्रुओं को मित्र, गुप्त को प्रकट तथा विष को अमृत बना देता है हे सज्जनों ! उस भगवती रूप सत् क्रिया की आराधना कर इच्छित फल को भोगो । वृथा व्यसन में मन न लगाओ ॥९९॥

99. Oh good man! do not uselessly set your heart upon many virtues out of hobby; but to obtain the desired object worship the goddess hospitality, who at once turns rogues into saints, ignorent into learned man, foes into friends, distance into proximity and poison into nectar.

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति
हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥ १०० ॥

बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिये कि अच्छे बुरे जिस काम को आरम्भ करें उस के परिणाम को

खूब विचारले अति शीघ्रता से किए हुए बुरे काम का फल आमरण हृदय में कांटे की समान खटकता रहता है॥ १००॥

100. A wise man should at first carefully weigh the result of an action whether good or bad; for the result of action done in haste, rankles in the breast like a thorn and burns in the heart.

स्थाल्यांवैदूर्यमय्यांपचति तिलकणांश्च-न्दनैरिन्धनाद्यैः सौवर्णैर्लाङ्गलाग्रैर्विलिखति वसुधामर्कमूलस्यहेतोः। कृत्वाकर्पूरखंडान्वृ-तिम्निहकुरुते कोद्रवाणांसमंतात् प्राप्ये मां कर्मभूमिं नचराति मनुजो यस्तपो मन्द-भाग्यः॥ १०१॥

जो मन्द भाग्य मनुष्य इस नर शरीर को पाकर तप आदि सुकर्म्म नहीं करता वह उस महामूर्ख के समान है जो चन्दन के ईंधनसे ८ वैदूर्य मणिके पात्र में तिलके छिलकों को पकाता

है अथवा आग के वृक्षकी जड़ निकालने के लिये सुवर्ण के हलसे पृथ्वी को जोतता है या कपूर की बाढ़ कोदों के चहूं ओर लगाता है ॥ १०१ ॥

101. That man is unfortunate, being born in this world of works, does not perform his duty for he cooks garlic, as it were, in a pot studded with gems with his fuel of sandel wood; he ploughs the ground, with a golden share to grow birthwort; and having cut camphor trees he makes a fence of them round kondrawa paspalum kora.

मज्जत्वम्भसि यातु मेरुशिखरं शत्रूञ्जय त्वाहवे । वाणिज्यंकृषिसेवनादिसकला विद्याःकलाः शिक्षताम् ॥ आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत्कृत्वा प्रयत्नं महान्नाभाव्यं भवतीहकर्मवशतो भाव्यस्य नाशःकुतः१०२

चाहे मनुष्य मोतियों के लिये गोता लगाए, चाहे सुमेरु पर्वत के शिखरपर चढ़जाए, चाहे संग्राममें शत्रुओं को जीते, चाहे व्यापार और कृषि

आदि विद्याओं को सीखले, चाहे पक्षीकी भाँति आकाशमें उड़ता फिरै परन्तु अनहोनी नहीं होती और जो भावी है वह अटल है १०२ ॥

102. A person may divo in tho water; go the top to the Meru; conquer the enemy in a buttle; teach or learn trade, tillage, service and all other sciences and arts and with great care soar high into the sky like a bird but an impossibility is never done owing to the iufiuence of the sequences of acts and events nor is there a destruction of destiny.

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानम् ।
सर्वो जनः सुजनतामुपयान्ति तस्य ॥
कृत्स्नाच भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा ।
यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य॥१०३॥

जिस मनुष्यके पूर्व जन्मोपार्जित पुण्यका उदय होताहै उसके लिये वन भी सुन्दरनगर बनजाता है, सब लोग उसके मित्र बनजाते हैं और उसकी समस्त भूमि रत्नोंसे भरजाती है ॥ १०३ ॥

103. To him whose merits of previous life are many, a fearful forest becomes a capital city, all or people arround him assume good nature, and all the earth becomes a mine full of precious stones.

को लाभो गुणिसङ्गमः किमसुखं प्राज्ञेतरैः सङ्गतिः, का हानिः समयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्वे रतिः । कः शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा कानुव्रता किं धनं विद्या किं सुखमप्रवासगमनं राज्यं किमाज्ञाफलम् ॥१०४॥

लाभ क्या है ? गुणियों का संग, दुःख क्या है ? मूर्खों की संगति, हानि क्या है ? समय को व्यर्थ खोना या समय चूक जाना, निपुणता क्या है ? धर्ममें प्रीति होना, शूर कौन है ? जितेन्द्री, अच्छी स्त्री कौनहै ? पतिव्रता, धन क्या है ? विद्या, दुःख क्या है ? परदेश में रहना, राज्य क्या है ? आज्ञा में चलना ॥ १०४ ॥

104. Question. What is profit ? A. The company of the learned. 2. What is pain ? A.

The company of the ignorent. What is loss? A The waste of time and punctuality: What is proficiency? A delight in essence of religion. Who is a hero? A. He that has subdued the senses Who is the dear wife? A. She who is faithful. What is wealth? A Knowledge. What is pleasure? A. A free life. What is kingdom A. The establishment of authority.

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचनाढ्यैःस्वदार परितुष्टैः परपरिवादानिवृत्तैःक्वचित्क्वचिन्मंडिता बसुधा ॥ १०५ ॥

जो पुरुष कठोर वचन न बोल कर सर्वदा मीठे वचन बोलते अपनीही स्त्री से प्रसन्न रहते और पराई निन्दा नहीं करते हैं वे इस पृथ्वीको कहीं २ ही शोभित कर रहे हैं सर्वत्र नहीं ॥१०५॥

105. The earth is sparely peopled here and there by those who are poor in unpleasant speech, who are rich in sweet speech, who are content with their own wives and who are free from slandering other.

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्ते
र्नशक्यते धैर्यगुणाः प्रमार्ष्टुम्।
अधोमुखस्यापि कृतस्य वन्हे
र्नाधः शिखा याति कदाचिदेव १०६

यदि धीर पुरुष पर विपत्ति भी पड़जाय, तब भी उस का स्वाभाविक धर्म्म धैर्य्य नहीं नष्ट होता जिसप्रकार जलतीहुई अग्नि को कितनाही टेढ़ा उलटा करो परन्तु उसकी ज्वाला ऊपर को ही जातीहै नीचेको कदापि नहीं जाती ॥१०६॥

106. None can take off the presence of mind of a persevering man though fallen in troubble, for the flame of fire though turned topsy-turvey does not go downwords.

कान्ताकटाक्षविशिखा न दहन्ति यस्य
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः
कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न लोभपाशै
र्लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः१०७

जिस मनुष्य के चित्त को स्त्री कटाक्षरूपी बाण से व्याकुल नहीं करती और जिसके हृदयमें क्रो-धाग्नि नहीं भड़कती तथा जो इन्द्रियों के विषय से नहीं खैंचा गया वही धीर पुरुष तीनों लोकों को जीतने में समर्थ हैं ॥ १०७ ॥

107. He is a wise man and conquers the whole of three-fold world whom the arrows of woman's blandishments do not pierce, whose heart the heat of the fire of anger does not burn, and whom various desires do not attract by the snares of avarice.

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम् ।
क्रियते भास्करेणैव स्फारस्फुरिततेजसा १०८

एकही पराक्रमी पुरुष समस्त भूमण्डल को अ-पने प्रबल पराक्रम से वश में करसक्ता है जिस प्रकार अकेला सूर्य्य सारे संसार को अपनी किरणों से तपा देता है ॥ १०८ ॥

108. Even one hero subdues the face of the earth as does the sun full of glory.

वन्हिस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायतेतत्क्षणान्मेरुः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते । व्यालो माल्यगुणायते विषरसः पीयूषवर्षायते यस्याङ्गेऽखिललोक वल्लभतमं शीलंसमुन्मीलति ॥ १०९ ॥

उस पुरुष के लिये अग्नि भी जल की समान शान्त हो जाती है, समुद्र भी नहर के समान होजाता है, सुमेरुपर्वत भी छोटी शिलाकी समान दीखता है, सिंह हरिणकी बराबर जानपड़ताहै, सर्प माला की समान बनजाता है, और विष अमृतकी समान प्रतीत होनेलगता है, जिसके शरीरमें समस्त लोक का मोहनेवाला एक शील विराजमान्है ॥ १०९ ॥

109. To him whose body is adorned with virtuous conduct; the favourite of the whole world, a fire at once turns into water, the sea into small stream, the Meru into a small rock, the loin into a deer, the snake into a garland and poison into water.

लज्जागुणौघजननींजननीमिवस्वा--
मत्यन्त शुद्ध हृदयामनुवर्तमानाम्
तेजस्विनः सुखमसूनपि सन्त्यजन्ति
सत्यव्रतव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम् ११०

इति भर्तृहरिकृतं नीतिशतकं समाप्तम् ॥

लज्जा आदि गुणों को उत्पन्न करनेवाली माता के समान अत्यन्त शुद्ध हृदय और सदा स्वाधीन रहनेवाली ऐसी प्रतिज्ञा को सत्यवादी तेजस्वी पुरुष कदापि नहीं त्यागते प्रत्युत प्राणों का छोड़ देना उनके लिये दुःखदायक नहीं होता ॥ ११० ॥

पं० ज्वालादत्त शर्म्मकृतं
भाषार्थ सहितं श्रीभर्तृहरि कृतं
नीतिशतकं समाप्तम् ॥

110. The men of true vow and great glory would gladly give up the life but not the word of promise which is to them like their mother dependent and of very pure heart and like the generation of modesty and multitude of virtues.

THE END.

सिखोंके दशगुरु ।

सिखों के नानक आदि दश गुरुओं का नाम किस ने नहीं सुना ? कौन हिन्दू इन महात्माओं का कृतज्ञ नहीं ! कौन वीर शिरोमणि गुरु गोविन्द जी और उन के वीर बालकों की शूरता नहीं जानता ? एक समय यह देश म्लेच्छ क्रान्तथा उस समय हिन्दुओं पर जोर विपत्तियें पड़ीं, उनको आज स्मरणमात्र से रोमांच होजाते हैं । एवं विकट समयमें, ऐसे विपरीत कालमें, ऐसे कठोर शासकों के शासन में सिखगुरु महोदय ने किसप्रकार अपने जीवनको आहुति देकर महान यज्ञद्वारा हिन्दू जातिका उद्धारन किया वह हर हिन्दु को ज्ञातव्य है । इसलिये, हमने उन्हीं प्रतापी उन्हीं वीरचक्र चूड़ामणी नानकादि दशगुरुओं का जीवनचरित्र शुद्ध हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया है सब के सुभीते के लिये मूल्य ॥) मात्र रक्खा है ।

नोट । औरभी हमारे यहां उत्तमर सज्जनों के जीवनचरित्र और आर्य्यधर्म सम्बन्धी पुस्तकें मिल सकती हैं बड़ा सूचीपत्र मगाकर देखियेगा ।

पं० शंकरदत्त शर्म्मा प्रोप्राइटर
धर्मदिवाकर प्रेस मुरादाबाद.

सबप्रकार की आर्य्यसम्बन्धी पुस्तकों के
मिलने का पता—

पण्डित शंकरदत्त शर्म्मा

धर्म्मदिवाकर प्रेस व अध्यक्ष वैदिक
पुस्तकालय मुरादाबाद.